Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2018 SHISRRJ | Volume 1 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

आर्ष ब्रह्मणस्पति के विषय में धर्मशास्त्रीय दृष्टि

डॉ0 अर्चना सिंह
एसो0 प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद डिग्री कालेज, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

सारांश– भगवान् ब्रह्मणस्पति श्रीगणपति–सिद्धि–बुद्धि के स्वामी वेदप्रतिपाद्य श्रीगणेश अचिन्त्य, अनन्त और अव्यक्त होकर भी अपने उपासकों पर कृपा करने के लिये उनके ध्यान, चिन्तन एवं उपासना में साकार हो जाते हैं।

मुख्य शब्द– आर्ष, ब्रह्मणस्पति,धर्मशास्त्रीय, वेद, वाङ्मय,उपासना, चिन्तन।

वेद विश्व का आदि वाङ्मय है। वेदों में गणपति का 'ब्रह्मणस्पति' रूप में निरूपण उपलब्ध होता है। समस्त मङ्गलों के परम निधान श्रीगणपति ब्रह्मणस्पति–रूप में सर्वज्ञाननिधि हैं, वे सर्वश्रेष्ठ देव हैं, समस्त वाङ्मय के अधिष्ठाता कवि हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद आदि तथा ऐतरेय ब्राह्मण और गणपत्युपनिषद् आदि में ब्रह्मणस्पति गणेश का विशद तत्त्वाङ्कन मिलता है। श्रीब्रह्मणस्पति के वैदिक तत्त्वाङ्कन का निदर्शन पुराणों में भी किया गया है। मुद्गलपुराण के अष्टम खण्ड के धूम्रवर्ण–चरित्र के प्रसङ्ग में भगवान् शिव ने सर्वपूज्य, माङ्गल्येश, विघ्नेश्वर, सिद्धिबुद्धि–पति ब्रह्मणस्पति की वन्दना की है–

सिद्धिबुद्धिपतिं वन्दे ब्रह्मणस्पतिसंज्ञितम्।
माङ्गल्येशं सर्वपूज्यं विघ्नानां नायकं परम्।।
मातापितायं जगतां परेषां तस्यापि माता जनकादिकं न।
श्रेष्ठं वदन्ते निगमाः परेशं तं ज्येष्ठराजं प्रणमामि नित्यम्।।[1]

'ये गणेशजी जगत् में अन्य सभी लोगों के माता–पिता हैं, किंतु इनका कोई माता–पिता नहीं है। वेद इन परमेश्वर को सबसे श्रेष्ठ कहते हैं। मैं इन ज्येष्ठराज गणेश को नित्य प्रणाम करता हूँ।'

श्रीगणेशजी परब्रह्म परमात्मा हैं। श्रीविष्णु ने पार्वती जी के प्रति भगवान् गणेश की ज्ञाननिर्वाणरूपता एवं परब्रह्मरूपताका वर्णन करते हुए उनकी वन्दना की है–

ज्ञानार्थवाचको गश्च णश्च निर्वाणवाचकः।
तयोरीशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम्।।[2]

गणेश–आगममें सात करोड़ मन्त्र कहे जाते हैं। इसका रहस्य भगवान् शिव और कुछ–कुछ ब्रह्माजी को विदित है। श्रीब्रह्माजी की व्यासजी के प्रति स्वीकृति है–**'सप्तकोटिमहामन्त्रा गणेशस्यागमे स्थिताः।**[3]

यद्यपि वेदों में भगवान् ब्रह्मणस्पति के मन्त्र आदि वर्णित हैं तथा उनके स्वरूप का अभिव्यंजन प्राप्त होता है, तथापि वेदज्ञ भी इनका तत्त्व नहीं समझ पाते। देवताओं ने उनकी स्तुति में अपना मत इस प्रकार अभिव्यक्त किया है–

नमो नमो विश्वमृतेऽखिलेश नमो नमः कारणकारणाय।

नमो नमो वेदविदामदृदश्य नमो नमः सर्ववरप्रदाय।।[4]

'अखिलेश्वर! आप विश्व का भरण–पोषण करने वाले हैं, आपको बारंबार नमस्कार है। आप कारणों के भी कारण हैं, आपको अनेक बार नमस्कार है। वेदवेत्तओं की भी दृष्टि आप तक नहीं पहुँच पाती है, आपको नमस्कार है, नमस्कार है। सबको वर देने वाले गणेश! आपको बारंबार नमस्कार है।'

वेदज्ञ उनके तत्त्व का दर्शन नहीं कर पाते हैं, उनका तात्त्विक साक्षात्कार उन्हीं की कृपा पर निर्भर है। महात्मा श्रीविनायक की महिमा बड़ी भारी है, वे महान् पुरुषों में भी सबसे बड़े महात्मा हैं–इसका स्पष्टीकरण भगवती पार्वती के प्रति कहे गये भगवान् श्रीकृष्ण के वचन से हो जाता है।

शृणु देवि महाभागे वेदोक्तं वचनं मम।

यच्छ्रुत्वा हर्षिता नूनं भविष्यसि न संशयः।।

विनायकस्ते तनयो महात्मा महतां महान्।।[5]

'गणपत्युपनिषद्' में अपने परब्रह्मस्वरूप की व्यापकता पर स्वयं गणेश जी ने प्रकाश डाला है कि 'जिनका नमन कर मुनि लोग निर्विघ्नता से उस पद को प्राप्त होते हैं और जो 'गणेशोपनिषद्' से जाना जाता है, मैं वही सर्वव्यापी ब्रह्म हूँ'–

यं नत्वा मुनयः सर्वे निर्विघ्नं यान्ति तत्पदम्।

गणेशोपनिषद्वेद्यं तद् ब्रह्मैवास्मि सर्वगम्।।[6]

श्रुतिप्रतिपाद्य भगवान् गणपति–ब्रह्मणस्पति आदि–अन्त से रहित, स्वाधीन और नित्य कालस्वरूप हैं। वे दिग्बन्धन से अनवच्छिन्न, सर्वव्यापक, सम्पूर्ण परमात्मा हैं। भगवान् गणपति प्रत्यक्ष तत्त्व हैं, कर्ता, धर्ता और हर्ता हैं। सब रूपों में विद्यमान ब्रह्म हैं, आत्मा हैं, उनका औपनिषद स्तवन इस प्रकार है–

'ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्तासि। त्वमेव केवलं हर्तासि। त्वमेवं सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्।'[7]

श्रीगणेशजी अव्यय हैं, अविनाशी और अगम हैं, वे निर्गुण–निराकार हैं, मन और वाणी से परे सच्चिदानन्दस्वरूप परब्रह्म है। अपने स्वजनों–उपासकों पर कृपा करने के लिये वे साकार हो जाते हैं। ब्रह्मा–शिव आदि भी उन्हें तत्त्वतः नहीं जानते हैं और न शेष ही उनकी महिमा का पूर्ण रूप से वर्णन कर पाते हैं–

यस्य स्वरूपं न विदुर्ब्रह्मेशानादयः सुराः।

सहस्रवदनो यस्य महिमानं न च क्षमः।।

यावद्विशेषविदपि प्रवक्तुं राजसत्तम।।[8]

श्रीगणेश के उपासक भी उनको 'निर्गुण' ही कहते हैं। उनका स्वरूप–वर्णन करने में कोई भी समर्थ नहीं कहा जा सकता है–

गणेशस्य स्वरूपं न वक्तुं केनापि शक्यते।

तथाप्युपासनासक्तैर्निर्गुणं तन्निरूप्यते।।[9]

भगवान् गणपति परमानन्द हैं, वे ही परम गति हैं। वेद–शास्त्रार्थदर्शी उन्हें 'परब्रह्म' कहते हैं। ब्रह्मा के वचन हैं–

यमाहुः परमानन्दं यमाहुः परमां गतिम्।

यमाहुः परमं ब्रह्म वेदशास्त्रार्थदाशनः।।[10]

भगवान् गणनायक ब्रह्मणस्पति, सत्–असत्, व्यक्त और अव्यक्त–सब कुछ हैं। वे अजन्मा और निर्विकल्प हैं, लौकिक आनन्द से परे, अद्वैत एवं परमानन्दपूर्ण है। निराकार, सर्वश्रेष्ठ, निर्गुण और इच्छारहित परब्रह्मस्वरूप हैं–

अजं निर्विकल्पं निराकारमेकं निरानन्दमद्वैतमानन्दपूर्णम्।

परं निर्गुणं निर्विशेषं निरीहं परब्रह्मरूपं गणेशं भजेम।।[11]

भगवान् वामन ने श्रीगणेश जी की महिमा का वर्णन करते समय उनके तात्त्विक स्वरूप का अभिव्यंजन करते हुए उन्हें 'वेदवन्दित' कहा है। श्रीवामन के मन्त्रजप के प्रभाव से भगवान् ब्रह्मणस्पति श्रीगणेश जी ने उन्हें साक्षात् दर्शन दिया था। श्रीवामन ने उनकी स्तुति की–

अव्यक्तं व्यक्तहेतुं निगमनुततनुं सर्वदेवाधिदेवं

ब्रह्माण्डानामधीशं जगदुदयकरं सर्ववेदान्तवेद्यम्।

मायातीतं स्ववेद्यं स्थितिविलयकरं सर्वविद्यानिधानं

सर्वेशं सर्वरूपं सकलभयहरं कामदं कान्तरूपम्।।[12]

'जो अव्यक्तस्वरूप तथा व्यक्त जगत् के हेतु हैं, जिनका श्रीविग्रह वेदवन्दित है, जो सम्पूर्ण देवताओं के भी अधिदेव हैं, जो अखिल ब्रह्माण्डों के नायक, जगत् के स्रष्टा, सर्ववेदान्तवेद्य, मायातीत, स्वसंवेद्य, सृष्टि, स्थिति और संहार के कर्ता है। जो समस्त विद्याओं की निधि, सर्वेश्वर, सर्वरूप, सर्वभयहारी, मनोवांछित वस्तु देने वाले तथा कमनीयरूपधारी हैं, उन श्रीगणेश जी की मैं वन्दना करता हूँ।'

श्रीब्रह्मणस्पति समस्त स्तुतियों के आश्रय हैं। वेद में उनका निरूपण–तत्त्वाङ्कन विद्यमान रहने पर भी वे वेदों की पहुँच के बाहर हैं, वेदातीत हैं–**'परं स्तुतीनामपदं श्रुतीनाम्'**।

भगवान् ब्रह्मणस्पति गणेश जी प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं, वे ज्ञान–विज्ञानमय हैं। स्कन्दपुराण के काशी खण्ड में उनकी स्तुति है–'हे परमकारण! आप कारणों के भी कारण हैं, वेद के विद्वानों द्वारा सदा एकमात्र आप ही जानने योग्य हैं। आप ही वेद–वाणी में अनुसंधान करने योग्य, अनिर्वचनीय तत्त्व हैं। यह सम्पूर्ण चराचर जगत् आपके दिव्य स्वरूप का एक अंश है तथा आप वाणी के अविषय हैं'–

त्वं कारणं परमकारण कारणानां वेद्योऽसि वेदविदुषां सततं त्वमेकः।

त्वं मार्गणीयमसि किंचन मूलवाचां वाचामगोचर चराचर दिव्यमूर्ते।।[13]

श्रीशुकदेव जी ने श्रीमद्भागवत में ब्रह्मतेज के इच्छुक उपासकों के लिये ब्रह्मणस्पति की उपासना युक्तिसंगत बतायी है। ब्रह्मणस्पति वेदपति वृहस्पति हैं–गणपति हैं–

'ब्रह्मवर्चसकामस्तु यजेत ब्रह्मणस्पतिम्।'[14]

परब्रह्म श्रीगणेश जी ब्रह्मणस्पति रूप में ऋक्–यजुः साम–तीनों वेदों के सार हैं–**'त्रयीवेदसारं परब्रह्मपारम्।'**

ब्रह्माजी का गणेश के प्रति कथन है कि :''आपका नाम वेदों का मूलभूत ओंकाररूप है और आप गणों के स्वामी हैं, इसलिये आपका नाम 'गणेश' होगा''–

त्वन्नाम बीजं प्रथमं ओंकाररूपं श्रुतिमूलभूतम्।

यतो गणानां त्वमसीह ईशो गणेश इत्येव तवास्तु नाम।।[15]

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद में ब्रह्मणस्पति के सम्बन्ध में जो उल्लेख मिलता है, उससे उनके गणपति रूप का तात्पर्य स्पष्ट हो जाता है–

गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्।

ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम्।।[16]

उपर्युक्त मन्त्र के देवता ब्रह्मणस्पति हैं। ये ब्रह्मणस्पति वेदज्ञान के पालक परब्रह्म परमेश्वर हैं, गणों में प्रमुख हैं, उनके स्वामी हैं, कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं, परम यशस्वी तथा कीर्तनीय हैं; ये प्रत्येक स्थान में विद्यमान हैं। महामति सायण ने उपर्युक्त मन्त्र के भाष्य में ब्रह्मणस्पति देवता का रूप इस प्रकार व्यक्त किया है–

'हे ब्रह्मणस्पत ब्रह्मणोऽन्नस्य परिवृढस्य कर्मणो वा पते पालयितः गणानां देवादिगणानां सम्बन्धिनं गणपतिं स्वीयानां पतिं कवीनां क्रान्तदर्शिनां कविम् उपमश्रवस्तमम् उपमीयतेऽनयेत्युपमा सर्वेषामन्नानामुपमानं श्रवोऽन्नं यस्य स तथोक्तः अतिशयेनोपमश्रवाः उपमश्रवस्तमः ....ज्येष्ठराजं ज्येष्ठाः प्रशस्यतमाः तेषां मध्ये राजन्तं ब्रह्मणां मन्त्राणां स्वामिनं त्वा त्वां हवामहे अस्मिन् कर्मण्याह्वयामः किंच नोऽस्माकं स्तुतीः आशृण्वन् त्वम् ऊतिभिः पालनैर्हेतुभूतैः सादनं सीदन्त्यस्मिन्निति सदनं यज्ञगृहमासीदोपविश।'

अभिप्राय यह है कि 'हे ब्रह्मणस्पति! आप देवों में गणपति और कवियों– क्रान्तदर्शी विद्वानों में सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। आपका अन्न सर्वश्रेष्ठ और उपमानभूत है। आप ज्येष्ठराज–प्रशंसनीय लोगों में राजमान और मन्त्रों के

स्वामी हैं। हम आपको बुलाते हैं। आप हमारी स्तुति सुनकर आश्रय प्रदान करने के लिये यज्ञगृह में आसन ग्रहण कीजिये।'

'ऐतरेयब्राह्मण' (4/4/21) में इसी अभिप्राय का मन्त्र उपलब्ध होता है–

'गणानां त्वा गणपतिं हवामह इति ब्राह्मणस्पत्यं ब्रह्म वै बृहस्पतिर्ब्रह्मणैवैनं तद्भिषज्यति।'

भगवान् ब्रह्मणस्पति ही इस मन्त्र के प्रकाश में गणपति हैं, बृहस्पति हैं।

ब्रह्मणस्पति सुगोपा–उत्तम संरक्षक हैं, जिसकी वे रक्षा करते हैं, वह किसी के भी द्वारा उत्पीड़ित और संतापित नहीं हो सकता–

न तमंहो न दुरितं कुतश्चन नारातयस्तितिरुर्न द्वयाविनः।

विश्वा इदस्माद् ध्वरसो वि बाधसे यं सुगोपा रक्षसि ब्रह्मणस्पते।।[17]

'हे सुरक्षक ब्रह्मणस्पति! जिसकी आप रक्षा करते हैं, उसे कोई दुःख–कष्ट नहीं दे सकता। पाप उसे पीड़ित नहीं कर सकते। शत्रु उसे मार नहीं सकते, वंचक उसे सता नहीं सकते। हे देव! उसके लिये आप समस्त हिंसकों को दूर भगा देते हैं।'

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के अठारहवें सूक्त के देवता ब्रह्मणस्पति हैं। इस सूक्त का दूसरा मन्त्र भगवान् गणपति के सिद्धिदाता और पुष्टिप्रदान करने वाले गुण का द्योतन करता है। इसमें श्रीगणेश का माङ्गलिक रूप स्पष्ट हो जाता है–

यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः। स वः सिषक्त यस्तुरः।।

उपर्युक्त मन्त्र का भाष्य सायणाचार्य द्वारा प्रस्तुत है–

'यो ब्रह्मणस्पतिः रेवान् धनवान् यश्वामीवहा रोगाणां हन्ता वसुवित् धनस्य लब्धा पुष्टिवर्धनः पुष्टेवर्धयिता यश्च तुरः त्वरोपेतः शीघ्रफलदः स ब्रह्मणस्पतिर्नोऽस्मान् सिषक्तु सेवतां परिगृह्यानुगृह्णात्वित्यर्थः।'

अभिप्राय यह है कि जो सम्पत्तिशाली, रोगापसारक, धनदाता, पुष्टिवर्धक और शीघ्र फलदाता हैं, वे ही ब्रह्मणस्पति हम लोगों पर अनुग्रह करें।

शुक्लयजुर्वेद (23/19) का निम्न उद्धृत मन्त्र भगवान् गणेश की पूजा में विद्वानों तथा शास्त्रज्ञों द्वारा प्रयुक्त होता है–

'गणानां त्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा स्वमजासि गर्भधम्।।'

उपर्युक्त मन्त्र द्वारा आवाहित तथा पूजित गणेश–भगवान् ब्रह्मणस्पति गणपति, प्रियपति–स्वामी अथवा सर्वनियन्ता परमेश्वर और निधिपतिरूप में स्वीकृत हैं। किसी–किसी भाष्यकार के मत से उपर्युक्त मन्त्र का यह अर्थ विदित होता है कि 'हे परमदेव गणेश जी! आपको हम समस्त गणों का पति स्वीकार करते हैं, आपको प्रिय पदार्थों–प्राणियों का पालक और समस्त सुखनिधियों का निधिपति स्वीकार करते हैं। आप सृष्टि को उत्पन्न

करने वाले हैं, हम–जीवात्मा हिरण्यगर्भ को धारण करने वाले–संसार को अपने–आप में धारण करने वाली प्रकृति के भी स्वामी आपको प्राप्त हों।'

'सामवेद' के एक मन्त्र में भगवान् ब्रह्मणस्पति का उल्लेख उपलब्ध होता है, जिसमें उपासक द्वारा उनकी प्राप्ति की प्रार्थना की गयी है–

'प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता।'

मन्त्र का आशय है कि ब्रह्माण्ड के पालक ईश्वर ब्रह्मणस्पति और वाग्देवता–भगवती वाणी हमें प्राप्त हों। यही मन्त्र ऋग्वेद 1/40/3 में भी मिलता है।

भगवान् ब्रह्मणस्पति की स्तुति ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शेष, वेद तथा वेदज्ञों के वश की बात नहीं है। साक्षात् श्रीविष्णु के वचन हैं–'ईश'! मैं सनातन ब्रह्मज्योतिः स्वरूप आपका स्तवन करना चाहता हूँ, पर आपके अनुरूप निरूपण करने में मैं सर्वथा असमर्थ हूँ। शेष अपने सहस्रों मुखों से भी आपकी स्तुति करने में असमर्थ हैं। आपके स्तवन में न पंचमुख महेश्वर समर्थ हैं न चतुर्मुख ब्रह्मा; न सरस्वती की शक्ति है और न मैं ही समर्थ हूँ। आपका स्तवन करने में चारों वेद भी समर्थ नहीं हैं, फिर उन वेदवादियों की क्या गणना है।'

ईश त्वां स्तोतुमिच्छामि ब्रह्मज्योतिः सनातनम्।
निरूपितुमशक्तोऽहमनुरूपमनीहकम्।।
त्वां स्तोतुमक्षमोऽनन्तः सहस्रवदनेन च।
न क्षमः पंचवक्त्रश्च न क्षमश्चतुराननः।।
सरस्वती न शक्ता च न शक्तोऽहं तव स्तुतौ।
न शक्ताश्च चतुर्वेदाः के वा ते वेदवादिनः।।[18]

आद्यदेव वेदप्रतिपाद्य ब्रह्मणस्पति भगवान् गणपति का ज्ञान केवल स्वानुभव से होता है तो हो जाता है। बड़े–बड़े स्वानुभवी संत–महात्माओं, ऋषि–मुनियों और आत्मवादियों ने स्वानुभव में उनके स्वरूप का साक्षात्कार किया है। वे ओंकारस्वरूप परमात्मा हैं। महात्मा ज्ञानेश्वर ने श्रीमद्भगवद्गीता की टीका 'ज्ञानेश्वरी' में श्रीगणेश जी के माङ्गलिक स्वरूप को स्मरण करते हुए उनकी स्तुति की है–

'ऊँ नमो श्रीआद्या। वेद प्रतिपाद्या। जय जय स्वसं वेद्या आत्मरूपा। देवा तूंचि गणेशु। सकलमति प्रकाशु।' (1/1–2)

आशय यह है कि 'हे ओंकारस्वरूप परमात्मा! वेद ही आपका प्रतिपादन कर सकते हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप ऐसे आत्मस्वरूप हैं, जिनका ज्ञान केवल स्वानुभव से हो सकता है। मैं आपकी जय–जयकार करता हूँ।'

भगवान् ब्रह्मणस्पति श्रीगणपति–सिद्धि–बुद्धि के स्वामी वेदप्रतिपाद्य श्रीगणेश अचिन्त्य, अनन्त और अव्यक्त होकर भी अपने उपासकों पर कृपा करने के लिये उनके ध्यान, चिन्तन एवं उपासना में साकार हो जाते हैं।

सन्दर्भ :

1. मुद्गलपुराण, खण्ड 8/49/17, 30
2. ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, गणपति, 44/87
3. गणेशपुराण, उपासना, 11/3
4. गणेशपुराण, उपासना, 40/44
5. ब्रह्माण्डपुराण, मध्य तृतीय उपाद्धात, 42/30
6. गणपत्युपनिषद्
7. गणपति अथर्वशीर्ष उप0, 1
8. गणेशपुराण, उपासना खण्ड, 9/31–32
9. गणेशपुराण, उपासना खण्ड, 1/13
10. गणेशपुराण, उपासना खण्ड, 10/27
11. गणेशपुराण, उपासना खण्ड, 13/3
12. गणेशपुराण, क्रीडा0, 31/14
13. स्कन्दपुराण, काशीखण्ड, 57/30
14. श्रीमद्भागवतपुराण, 2/3/2
15. गणेशपुराण, उपासना, 45/8
16. ऋग्वेद, 2/23/1
17. ऋग्वेद, 2/23/5
18. ब्रह्मवैवर्तपुराण, गणपति0, 13/41, 49–50